28-66 156

प्रधानमंत्री श्रीमती इन्दिरा गांधी का
लाल-किला, दिल्ली से दिया गया
भाषण

दिनांक: १५-८-१९६७

भारत के निवासी मेरे सब भाईयों और बहिनों,

आज फिर एक बार मैंने राष्ट्रीय झण्डा यहां फहराया। आपको याद होगा पिछले साल जब मैं यहां ज़बर्दस्त बारिश में हम और आप भीग रहे थे, बारिश में और भूकम्प में, इस झण्डे को उड़ाया था। वह भूकम्प एक जैसे चेतावनी दे रहा था, आने वाली कठिनाईयों का और वास्तव में ऐसा ही हुआ, वह पूरा साल एक कठिनाईयों से भरा हुआ था। बारिश में हम खड़े थे, लेकिन बाद में बारिश की कमी हुई, और भारत के बहुत से हिस्सों में भयंकर सूखा पड़ा। और हमारी जनता को बड़ी कठिनाई हुई। आज बारिश नहीं हो रही है इस समय, लेकिन सारे हिन्दुस्तान में अच्छी वर्षा पड़ी है और हमारी आशा है, जितनी बारिश की हमको जरूरत है उतनी ही पड़ेगी और उससे हमारा देश एक नए मोड़ पर चलेगा। जो सूखा पड़ा, जो अनाज का अभाव हुआ, वह खतम होगा और एक नया जीवन शुरू हो सकेगा। कठिनाइयां हमारे देश ने सही, लेकिन मैं आपको यह भी याद दिलाऊं कि किस साहस से उस सूखाग्रस्त क्षेत्रों को लोगों ने इस कठिनाई को सहा। यह कोई आश्चर्यजनक बात नहीं है, साहस तो हमारी परम्परा ही है। कितनी कठिनाइयां, कितने दुःख, कितने हमलों का सामना हमारी जनता ने करा है। क्यों इस लाल किले को ही चुना गया इस अवसर के लिए? क्योंकि यह किला है देहली में, हिन्दुस्तान की देहलीज़, भारत का द्वार। यह जगह है जहां आज़ादी की लड़ाई की आवाज़ अनेक बार उठी, और यह आखिरी भी हमारी आजादी का आन्दोलन हुआ, देश का बंटवारा हुआ, झगड़े हुए तब भी एकता और आज़ादी की ध्वनि यहीं से बोली थी। हमने यह साल काटा

और पहले भी बहुत मुसीबतें झेली। सब में से भारत की जनता हमेशा ऊपर उठ के निकली है।

आज देश में कुछ निराशा छाई है। हम याद करें वह दिन, कुछ ही दिन हुए नौ अगस्त को हमने भारत छोड़ो आन्दोलन की पचीसवीं वर्षगांठ मनाई थी। पचीस साल पहले एक दुनियां में अंधेरा छाया था, हिंसा थी, लड़ाई थी, लेकिन गांधी जी ने हमको कहा, अपने को आज़ाद मानो, हमको एक नारा दिया 'करो या मरो'। आजादी की कहीं किरण भी नहीं दिखलाती थी, लेकिन पांच ही साल बाद हम आजाद हुए। तो कितना भी अंधेरा दिखे, कितनी भी कठिनाईयां दिखें, हम यह न समझें कि उजाला दूर है या अच्छे दिन दूर हैं। लेकिन वहां तक पहुंचने केलिए एक भारी साहस की आवश्यकता है। इन आज़ादी के वर्षों में बहुत कुछ हुआ, और बहुत कुछ नहीं हुआ। मुझे मालूम है कि बहुत कुछ और हम कर सकते थे, लेकिन मैं आपको याद दिलाऊं कि क्या हुआ, उसको भी हम कभी कभी सोचें।

आज भारत की आधी जनता बीस साल से कम उम्र की है। उनको न गुलामी की जानकारी, न आजादी के आन्दोलन की याद। वह कैसे दोनों ज़मानों का मुकाबला कर सकते हैं? किस तरह से यह गरीब, यह भूखी, कमज़ोर जनता एक हो के, एक इतनी बड़ी लड़ाई लड़ी और खाली लड़ी नहीं, बल्कि उसमें कामयाब हुई। कुछ आवाजें उठती हैं, कुछ प्रचार होता है, देश में और विदेश में, कि जनसाधारण की तरक्की नहीं हुई। लेकिन अगर हम घूम के देखें तो शायद यह ज़रूर पायेंगे कि दूध, शक्कर और कुछ वस्तुओं के दाम पहले सस्ते थे। शहर के मध्यम वर्ग के लोग बहुत कम दाम में नौकर रख सकते थे लेकिन साथ ही साथ हम सोचें कि उन नौकरों की क्या हालत थी, क्या उनकेलिए तरक्की की कोई उम्मीद थी, क्या उनके बच्चे शिक्षा प्राप्त कर सकते थे,? । अगर शहर में ~~दाम~~ दाम कम थे तो किसानों की क्या हालत थी,? देहात की क्या हालत थी,? क्या उनके बच्चे स्कूल जा सकते थे,? क्या वह बस या साईकिल में चढ़ सकते थे? कोई भी अपनी जगह से निकल के कोई नए मौके ढूंढ सकता था,? यह सब बातें हैं। हम, हमारी रफ्तार कभी सुस्त हुई हो, कभी आहिस्ता हुई हो, लेकिन रफ्तार हमारी रुकी नहीं है। और आज हम हैं आप जो भाई और बहन देहात में

रहते हैं उनको मालूम होगा कि इस समय सावन-भादों के ज़माने में हमारे नदी और नाले जब भरे रहते हैं तो उनको पार करना कितना कठिन होता है । और यह भी मालूम होगा कि उनके बीच में सब से गहरा पानी होता है, सब से तेज़ धारा होती है । आज हिन्दुस्तान की जो यात्रा है, स्वराज्य से स्वदेशी, उस के ठीक बीच में हम हैं, गहरे पानी में हैं, और भारी प्यास से ही हम उससे निकल सकते हैं । ऐसी जगह पे हैं कि पीछे घूम के देख नहीं सकते हैं, एक क्षण को भी हम रुक नहीं सकते हैं, अपने प्रयत्न को रोक नहीं सकते हैं। जोर से हमको तैर के आगे बढ़ के निकलना है। वह रास्ता हमारे आगे बढ़ने का, आसान होगा, साफ होगा, अगर उस रास्ते में से हम हिंसा को हटायें, साम्प्रदायिकता को हटाएं, भाषा और जाति के भेदभाव को हटाएं, तब यह काम पूरीतौर से हो सकेगा । बहुत सी चीजें हैं जो हमारे बीच में भेद भाव पैदा करती हैं । कुछ का नाम मैंने लिया, एक और है वह है प्रान्तीयता । हरेक प्रान्त आगे बढ़ना चाहता है, और यह अच्छा है। हरेक वर्ग आगे बढ़ना चाहता है और यह ठीक है। लेकिन कोई भी वर्ग, कोई भी प्रान्त, कोई भी व्यक्ति आगे नहीं बढ़ सकता, जब तक कि सारा देश आगे नहीं बढ़े । इसलिए हम सब को पहले देश का ख्याल करना है और फिर अपना ख्याल करना है ।

हमारे देश ने बड़ी बड़ी चुनौतियों का सामना किया है। और कठिनाइयों की कमी नहीं थी, लेकिन कठिनाइयों से हमने ऊपर उठना सीखा, और ऊपर उठ के आगे बढ़े । आज भी एक समस्या से हम गुज़रे हैं, अनाज का अभाव, जिस्से एक जगह नहीं, एक प्रान्त में नहीं, लेकिन हिन्दुस्तान के बहुत से हिस्सों में एक ऐसी समस्या पैदा की, कि हमको शंका होती है । हमको याद आते पुराने दिन भी, जब शंकाओं के दिन थे, जब आजादी मिली थी तो उस समय भी हमारे मन में ख्याल था कि क्या हम सरकार बना सकेंगे, क्या हम देश में एकता रख सकेंगे? और फौरन ही बाद देश का बंटवारा हुआ, काश्मीर पर हमला हुआ, गांधी जी की हत्या हुई । एक-एक कर हमारे महान नेता चल बसे, हमको वह याद आते

हैं आज। लेकिन साथ ही साथआहिस्ता आहिस्ता भारत की जनता ने अपनी ताक़त बढ़ाई। आज जो हमारे देश की ताक़त है किसी एक व्यक्ति की नहीं है, सारी जनता की ताक़त है। भारत के मर्द, भारत की औरतें, भारत के बच्चे, यह है हमारी आज की ताक़त। और जैसे कि जनता की ताक़त बढ़ी, वैसे ही हमारी माली हालत भी बढ़ी। देश ने कई तरह से अपनी मज़बूती को बढ़ाया है, कारख़ानों में और खेतों में, और वह काम हमको आज जारी रखना है। खाने की कमी हुई, हमने पूरी कोशिश की किस तरह से, कहां से, कहीं से भी, अनाज पहुंचायें, जिनको ज़रूरत है।

आज आपको मालूम है कि बंगाल में, केरल में, बिहार में, उत्तरप्रदेश में और और कई भारत के हिस्सों में कठिनाई कितनी ज़बर्दस्त रही है। किस भारी प्रयास से सरकार ने, गैर-सरकारी संस्थाओं ने, व्यक्तियों ने, और वहां के रहने वाली जनता ने, सब ने मिल के इसका सामना किया और इस कठोर समय से गुज़रे। अब आते हुए दो तीन महीने भी, हमारे लिए काफी मुश्किल के होंगे, लेकिन यह सब लोग जिन्होंने इतना साहस दिखाया, उन सब को मैं धन्यवाद देना चाहती हूं, क्योंकि उन्होंने भारत की लाज रखी, उन्होंने दिखाया कि किस तरह से एक आज़ाद देश एक समस्या का सामना कर सकता है। समस्या गम्भीर थी लेकिन उसमें से हम निकले और लाखों लोगों की जान हम बचा पाए।

आज समस्याओं की कमी नहीं है। महंगाई है और सब तरफ से यह मांग भी है कि वेतन बढ़ें, आपको मालूम है कि यह एक समस्या है जो केवल हमारे देश की नहीं, करीब करीब सारी दुनियां की है। महंगाई, कीमतें बढ़ती हैं, वेतन बढ़ते हैं, किराये बढ़ते हैं, और चीजें भी बढ़ती हैं और घूम-घाम के फिर महंगाई और फिर बढ़ती है। इस चक्कर को इस दौर को हमको किसी न किसी तरह से रोकना है। और हमारा, हमारी पूरी कोशिश है कि कोई न कोई रास्ता ऐसा हो जिससे यह चीज़ पकड़ में आए। लेकिन यह तब हो सकता है जब हममें से हरेक मिल के इस केलिए तैयार हो, हरेक व्यक्ति तैयार हो, सब केलिए त्याग करने को, जैसे जिसकी हैसीयत हो, उसके मुताबिक वह कुछ न कुछ करने को, कुछ न कुछ कम उपयोग करने को, कम खरीदने को तैयार हो, तभी

यह चीज़ पकड़ में आ सकती है । मुझे मालूम है कि यह आसान नहीं है। मुझे मालूम है कि जब महंगाई बढ़ती है, तो पड़ती तो सब पर है, सभी, लेकिन सब से ज्यादा बोझ उसका हमारे गरीब से गरीब भाइयों और बहनों पर होता है। तो मेरी पूरी सहानुभूति है उनके संग, मैं खूब इस प्रश्न को पहचानती हूं। लेकिन इसमें से निकले यह हमारे सामने सवाल है। मुझे मालूम है कि कोई नहीं केवल यही चाहता कि उनका वेतन बढ़े, बल्कि यह उनकी चिन्ता है कि उस वेतन से खरीद क्या सकते हैं, अपनी जरूरतें पूरी कर सकते हैं कि नहीं। तो यह रास्ता ढूंढना है कि वह ज़रूरतें उनको मिलें । आज भारत के पास साधनों की कमी है। यह सोचना है कि उन साधनों को कैसे बढ़ा सकते हैं। अगर कठिनाई सह के हम उन साधनों को बढ़ा सकते हैं तो जल्दी ही कठिनाईयां सब की दूर हो सकती हैं। लेकिन अगर हम सोचें कि नहीं आज अपना सोचें, हमको क्या मिल सकता है, तो हमें शायद आज थोड़ा बहुत आराम पहुंचे, बहुत तो नहीं पहुंच सकता, लेकिन साधन नहीं बढ़ेंगे, और आज का कष्ट कल भी रहेगा और परसों भी रहेगा। यह पेचीदा सवाल हमारे सामने है ।

हमारा संविधान ऐसा है भारत का कि अलग अलग दल की सरकार बन सकते हैं। आज हैं भी, और हरेक आजादी से अपने अपने रास्ते पे चल रहा है, और हमारी पूरी कोशिश है कि उनके साथ पूरा सहयोग हो । कभी कभी शायद गुस्से से, शायद लाचारी से, जो कठिनाईयों में होते हैं वह यह बात करते हैं कि हम सब से बराबर सा बर्ताव नहीं कर रहे। यह बात बिल्कुल बेबुनियाद है, बिल्कुल गलत है । भारत एक देश है। हम सब नागरिकों को बराबर मानते हैं, सब प्रदेशों को बराबर मानते हैं और हमारी चेष्टा, हमारी कोशिश यही है कि जो भी हमारे पास है, चाहे अनाज, चाहे दूसरे साधन, उनका ऐसे बंटवारा हो, कि सब तक पहुंचें और सभी की कम हों। लेकिन जैसे मैंने कहा कि इस समय बंटवारा इतना साधन का नहीं है, इतना धन का नहीं है, इतना अनाज का नहीं है, जितना कि कमी का बंटवारा है। अगर एक जगह कमी है तो उस कमी में दूसरे लोग कैसे साथ दें यह हमारे सामने प्रश्न है । मेरी आशा है कि हमारी सब जनता इसको समझेगी ।

हमने विकास का काम हाथ में लिया, और जो शिक्षा फैली, जो नारी जाति आगे बढ़ी, जो और यातायात में फर्क पड़ा और और बहुत से उद्योग के और दूसरे कार्यक्रम चले, उससे बहुत बड़ा परिवर्तन आया है, हम आगे बढ़े हैं और नए रास्तों पर आगे बढ़े हैं। जैसे जैसे नए रास्ते पे बढ़ते हैं उसकी नई कठिनाईयां आ के खड़ी होती हैं। हमको तो मालूम है कि देश चाहे अमीर हों, या चाहे गरीब हों कठिनाईयों से, समस्याओं से, कोई वंचित नहीं है। आप अखबार पढ़िए और आगे बड़े से बड़े देश की खबर देखिए, तो वहां भी उसी तरह की हलचल है। चाहे विद्यार्थियों में हलचल हो, चाहे दूसरी जातिभेद हो, चाहे भाषा पे हो, सभी पर करीब करीब किसी न किसी देश में कोई न कोई ऐसी समस्या खड़ी हुई है। तो हम अपनी समस्याओं को बहुत बड़ा के न देखें, हम भी उनको अपनी जगह पे देखें।

करीब ठीक दो साल हुए हमारे नेताओं ने एक सुझाव हमारे सामने रखा था। वह यह कि शिक्षा मातृभाषा में हो, विश्वविद्यालय तक मातृभाषा में हो जिसमें हमारी शिक्षा सब तक पहुंच सके, जिसमें जो लोगों की बुद्धि की शक्ति है, वह फूले और फले, मुक्त हो। लेकिन यह कब हो सकता है? क्योंकि अच्छी से अच्छी चीज़ भी हो, वह खतरे से भरी होती है कभी कभी, और ऐसे सब भाषाएं बढ़ें तो यह भी खतरा है कि शायद हरेक भाषा अपने को अला समझे और जुदा समझे। तो यह कार्य भी तब हो सकता है जब एक कोई ऐसी भाषा हो जिसको सब जानें, और सीखें और जो सब को एक कड़ी में बांध सके। और जैसे इस तरह से एक राष्ट्रीय कड़ी की आवश्यकता है, उसी तरह एक अन्तर्राष्ट्रीय कड़ी की भी आवश्यकता है। जिस में हमारे सम्बन्ध दूसरे सब देशों से बने रहें। आजकल की दुनियां में, उस सम्बन्ध को हम काट देंगे तो हमारी हानि होगी। तो इसके क्या माने हैं? क्षेत्रीय भाषा, राष्ट्रीय भाषा, अन्तर्राष्ट्रीय भाषा, तीन भाषाएं हो गईं। लेकिन इस सवाल में जैसे और सब मामलों में हमको सब का ख्याल करना है। किस को क्या कठिनाई होगी और कैसे उस कठिनाई को हम कम से कम कर सकें? कैसे हम अपने भारत के सब हिस्सों के भाइयों

और बहिनों को मदद कर सकें जिसमें किसी को न लो कि उनपर कष्ट है, उनपर कुछ ऐसा थोपा जा रहा है, जिसमें उनकी उन्नति में बाधा आए? जो भी काम हमको करने हैं । हम समझते हैं, किसी चीज़ को ठीक समझते हैं तो हमारा ख्याल होता है कि सब केलिए ठीक होगा, दूसरे लोगों के दूसरे विचार होते हैं। तो जो मिल जुल के रहना है, उनको सब के विचारों पर ध्यान देना है और ऐसा रास्ता ढूंढना है जिसमें सब मिल के साथ चल सकें, और न लोकतंत्र कमजोर हो, न एकता कमजोर हो । भाषा एक ऐसा एक प्रश्न है जिस से बहुत जल्दी लोग गुस्सा हो जाते हैं, और परेशान हो जाते हैं, लेकिन ठीक से उसका हम रास्ता ढूंढें तो वही एक साधन हो सकता है, एकता का, और आगे बढ़ने का । यही हमको आज करना है । जो प्रान्तीयता बढ़ी है, हरेक प्रदेश में लोग सब सोचते हैं कि उनको कुछ मिल जाए तो सारा देश आगे हो गया। यह सच है कि हम अपनी बड़ी बड़ी योजनाएं अगर हरेक प्रदेश में पूरी कर सकें तो आज हिन्दुस्तान का चित्र बदल जाये । लेकिन इतने साधन नहीं हैं तो चुनना पड़ता है कि किस प्रान्त में पहले क्या करा जाये । अगर हम इस दृष्टिकोण से देखें कि सब प्रान्त हमारे हैं, सब लोग भारतीय हैं और जो योजना आज नहीं हो वो कल या परसों अवश्य होगी, तो किसी को बेचैनी की जरूरत नहीं है, और सब काम अपने अपने समय पे हो जाएगा। यह एक धीरज की हमको जरूरत है ।

मुझे तो आपसे यही कहना है कि हम वह पुराने दिन याद रखें जब समस्याओं का सामना हमने करी और उनको भूल के, उनके ऊपर उठ के तेजी से हम आगे बढ़े । हमारी उन्नति केलिए शांति की आवश्यकता है। देश में शांति हम चाहते हैं और विदेश में, अन्तर्राष्ट्रीय क्षेत्र में भी शांति चाहते हैं। पड़ौसी देशों के संग तनाव होना कोई अजब बात नहीं है। तनाव होता है, अनेक प्रश्न उठते हैं, जैसे कि परिवार में और भाईयों और बहनों के बीच में भी उठते हैं। हमने हमेशा यह समझा कि यह जो तनाव है, प्रश्न हैं, यह शांति से और दोस्ती से सुलझा सकते हैं। यह हमने माना और आज भी हम मानते हैं। इसी कोशिश में हम लगे रहे हैं और आज भी हमारी यही कोशिश है। लेकिन अगर हमारी सीमा पर हमला हुआ तो फौजी हमले का सामना केवल फौजी ताकत से हो सकता है (तो)

कुछ ही दिन पहले मैं कुछ सीमा पर घूमी, हमारे बहादुर जवान और अफसर किस हालत में रह रहे हैं, किस कठिनाई सर्दी, बर्फ को सह रहे हैं यह मैं देख के आई, किस हिम्मत और साहस से, किस भावना से, वह कहां हैं यह भी मैंने देखा, मैंने उनको विश्वास दिलाया कि उनके पीछे सारा देश है, मैंने अपनी तरफ से उनको शुभकामनाएं दीं, भारत सरकार की तरफ से शुभकामनाएं दीं और आप सब जो नहीं थे, आप सब की तरफ से भी शुभकामनाएं दीं। मुझे पूरा विश्वास है कि हमारी तीनों सेनाएं जो हैं उनके हाथों में भारत की आजादी सुरक्षित है। लेकिन हमारा भी कुछ कर्तव्य है कि जब वह यह सब कठिनाई सह रहे हैं, अपनी जान देने को तैयार हैं तो हम भी अपनी एकता पूरी करने केलिए कुछ कष्ट उठाएं, यह वह हम से मांगते हैं। और हम सब को उस केलिए तैयार रहे होना चाहिए। हमारी, कुछ रास्ते हमने अपने सामने रखे और वह पुराने रास्ते हैं, लेकिन उनको घड़ी घड़ी फिर से कहना पड़ता है जिसमें हम भूलें नहीं, समाजवाद का रास्ता है, क्या है समाजवाद ? कोई उसको कुछ कहता है, कोई कुछ कहता है लेकिन साधारण एक चीज़ है, उसके माने केवल यह हैं कि देश की गरीबी हटाई जाए, देश में जो गरीब और अमीर में अन्तर है उसको कम किया जाए, जो हमारी पिछड़ी हुई या दबी जातियां हैं चाहे वह हमारे हरिजन भाई हैं, चाहे आदिवासी भाई हैं, चाहे पहाड़ पे रहने वाले लोग हों, उनकी उन्नति की जाए, उनको उठाया जाए, उनको आगे बढ़ने के मौके दिए जाएं। और जो भी धन इस देश में पैदा हो, जो वस्तुएं पैदा हों, उनका बंटवारा बराबरी से हो। यह हमारा समाजवाद है और इसका लक्ष्य हमको पूरा करना है, इस रास्ते पर हमको तेजी से चलना है।

भारत के सपूतो, चाहे औरत हों, चाहे मर्द, चाहे मज़दूर हो, चाहे किसान, चाहे व्यापारी हों, या कारखानेदार, चाहे अध्यापक हों, या विद्यार्थी, चाहे लेखक हों, चाहे कलाकार, आप सब हैं भारत के सपूत। कभी न भूलिए ~~आप कि~~ आप किस देश के रहने वाले हैं, कभी न भूलिए आपकी नसों में किन वीरों का, किन महान व्यक्तियों का खून बहता है। आईए आज हम इस अविश्वास

को विश्वास में बदलें, इस निराशा को आशा में बदलें, तब हम देश को मजबूत कर सकेंगे, जो नींव बनाई उसके ऊपर एक सुन्दर भारत को बना सकेंगे, सब मिल के हम यह सब कर सकते हैं, हम और आप बड़े और छोटे, बूढ़े, जवान और बच्चे, एक भारी काम हमने हाथ में लिया है, अब चाहे भूकम्प आए, चाहे भूचाल आए, चाहे भुखमरी आए, चाहे बीमारी आए, चाहे लड़ाई, चाहे कुछ हो, यह सब चीजें हमको सोचना है कि यह तो ज़िन्दगी के खेल हैं, इसका सामना हम हिम्मत से करेंगे, साहस से करेंगे और कभी हम अपनी ताई को दबने नहीं देंगे। भारत के निवासी, मेरे भाई और बहन, इसलिए हम सब मिल के भारत का नारा आज बोलेंगे और इस जोश से बोलिए, इस भावना से बोलिये कि यह सब चारों तरफ गूंज उठे, और हमारी दृढ़ता का, हमारे जोश का, हमारे विश्वास का, यह एक चिन्ह बना रहे और हमेशा केलिए भारत को ताकत देता रहे, भारत को ऊपर उठाता रहे, और आगे बढ़ाता रहे। अब मेरे संग मिल केतीन दफे जयहिन्द का नारा बोलियेगा।

जयहिन्द